

# उत्पत्ति

## संसार का आरम्भ

### पहला दिन-उजियाला

**1** आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी को बनाया। <sup>2</sup>पृथ्वी बेडौल और सुनसान थी। धरती पर कुछ भी नहीं था। समुद्र पर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।\* <sup>3</sup>तब परमेश्वर ने कहा, “उजियाला हो!”\* और उजियाला हो गया। <sup>4</sup>परमेश्वर ने उजियाले को देखा और वह जान गया कि यह अच्छा है। तब परमेश्वर ने उजियाले को अंधियारे से अलग किया। <sup>5</sup>परमेश्वर ने उजियाले का नाम “दिन” और अंधियारे का नाम “रात” रखा। शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह पहला दिन था।

### दूसरा दिन-आकाश

<sup>6</sup>तब परमेश्वर ने कहा, “जल को दो भागों में अलग करने के लिए वायुमण्डल\* हो जाए।” <sup>7</sup>इसलिए

---

**मण्डराता था** हिब्रू भाषा में इस शब्द का अर्थ है “ऊपर उड़ना” या “तेजी से ऊपर से नीचे आना। जैसे कि एक पक्षी अपने बच्चों की रक्षा के लिए घोंसले के ऊपर मण्डराता है।

**तब परमेश्वर ... उजियाला हो** “उत्पत्ति में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी का सृजन किया। जबकि <sup>2</sup>पृथ्वी का कोई विशेष आकार न था, और समुद्र के ऊपर घनघोर अंधेरा छाया था और परमेश्वर का आत्मा पानी के ऊपर मण्डरा रहा था। <sup>3</sup>परमेश्वर ने कहा, “उजियाला हो!” या, “जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना शुरू की, <sup>2</sup>जबकि पृथ्वी बिल्कुल खाली थी, और समुद्र पर अंधेरा छाया था, और पानी के ऊपर एक जोरदार हवा बही, <sup>3</sup>परमेश्वर ने कहा, ‘उजियाला होने दो।’”

**वायुमण्डल** इस हिब्रू शब्द का अर्थ “फैलाव” “विस्तार” या “मण्डल” है।

परमेश्वर ने वायुमण्डल बनाया और जल को अलग किया। कुछ जल वायुमण्डल के ऊपर था और कुछ वायुमण्डल के नीचे। <sup>8</sup>परमेश्वर ने वायुमण्डल को “आकाश” कहा! तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह दूसरा दिन था।

### तीसरा दिन-सूखी धरती और पेड़ पौधे

<sup>9</sup>और तब परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी का जल एक जगह इकट्ठा हो जिससे सूखी भूमि दिखाई दे” और ऐसा ही हुआ। <sup>10</sup>परमेश्वर ने सूखी भूमि का नाम “पृथ्वी” रखा और जो पानी इकट्ठा हुआ था, उसे “समुद्र” का नाम दिया। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

<sup>11</sup>तब परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी, घास, पौधे जो अन्न उत्पन्न करते हैं, और फलों के पेड़ उगाये। फलों के पेड़ ऐसे फल उत्पन्न करें जिनके फलों के अन्दर बीज हो और हर एक पौधा अपनी जाति का बीज बनाए। इन पौधों को पृथ्वी पर उगने दो” और ऐसा ही हुआ। <sup>12</sup>पृथ्वी ने घास और पौधे उपजाए जो अन्न उत्पन्न करते हैं और ऐसे पेड़, पौधे उगाए जिनके फलों के अन्दर बीज होते हैं। हर एक पौधे ने अपने जाति अनुसार बीज उत्पन्न किये और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

<sup>13</sup>तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह तीसरा दिन था।

### चौथा दिन-सूरज, चाँद और तारे

<sup>14</sup>तब परमेश्वर ने कहा, “आकाश में ज्योतिष्य होने दो। यह ज्योतिष्य दिन को रात से अलग करेंगी। यह ज्योतिष्य एक विशेष चिन्ह के रूप में प्रयोग की जाएंगी जो यह बताएंगी कि विशेष सभाएं\* कब शुरू

---

**विशेष सभाएं** महीनों और सालों का शुरू होने का निर्णय इब्राएली सूरज और चाँद के द्वारा करते थे और बहुत सी यहूदी छुट्टियाँ और विशेष सभाएं नये चाँद या पूर्णिमा के समय शुरू होते थे।

की जाएं और यह दिनों तथा वर्षों के समयों को निश्चित करेंगे। <sup>15</sup>वे पृथ्वी पर प्रकाश देने के लिए आकाश में ज्योतियाँ ठहरें” और ऐसा ही हुआ।

<sup>16</sup>तब परमेश्वर ने दो बड़ी ज्योतियाँ बनाई। परमेश्वर ने उन में से बड़ी ज्योति को दिन पर राज्य करने के लिए बनाया और छोटी ज्योति को रात पर राज्य करने के लिए बनाया। परमेश्वर ने तारे भी बनाए। <sup>17</sup>परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश में इसलिए रखा कि वह पृथ्वी पर चमकें। <sup>18</sup>परमेश्वर ने इन ज्योतियों को आकाश में इसलिए रखा कि वह दिन तथा रात पर राज्य करें। इन ज्योतियों ने उजियाले को अंधकार से अलग किया और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

<sup>19</sup>तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह चौथा दिन था।

### पाँचवाँ दिन-मछलियाँ और पक्षी

<sup>20</sup>तब परमेश्वर ने कहा, “जल, अनेक जलचरों से भर जाए और पक्षी पृथ्वी के ऊपर वायुमण्डल में उड़ें।” <sup>21</sup>इसलिए परमेश्वर ने समुद्र में बहुत बड़े बड़े जलजन्तु बनाए। परमेश्वर ने समुद्र में विचरण करने वाले सभी जीवित प्राणियों को बनाया। समुद्र में भिन्न-भिन्न जाति के जलजन्तु हैं। परमेश्वर ने इन सब की सृष्टि की। परमेश्वर ने हर तरह के पक्षी भी बनाये जो आकाश में उड़ते हैं। परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

<sup>22</sup>परमेश्वर ने इन जानवरों को आशीष दी, और कहा, “जाओ और बहुत से बच्चे उत्पन्न करो और समुद्र के जल को भर दो। पक्षी भी बहुत बढ़ जायें।”

<sup>23</sup>तब शाम हुई और सवेरा हुआ। यह पाँचवाँ दिन था।

### छठवाँ दिन-भूमि के जीवजन्तु और मनुष्य

<sup>24</sup>तब परमेश्वर ने कहा, “पृथ्वी हर एक जाति के जीवजन्तु उत्पन्न करे। बहुत से भिन्न जाति के जानवर हों। हर जाति के बड़े जानवर और छोटे रेंगनेवाले जानवर हो और यह जानवर अपने जाति के अनुसार और जानवर बनाए” और यही सब हुआ।

<sup>25</sup>तो, परमेश्वर ने हर जाति के जानवरों को बनाया। परमेश्वर ने जंगली जानवर, पालतू जानवर, और सभी छोटे रेंगनेवाले जीव बनाये और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा है।

<sup>26</sup>तब परमेश्वर ने कहा, “अब हम मनुष्य\* बनाएं। हम मनुष्य को अपने स्वरूप जैसा बनाएंगे। मनुष्य हमारी तरह होगा। वह समुद्र की सारी मछलियों पर और आकाश के पक्षियों पर राज करेगा। वह पृथ्वी के सभी बड़े जानवरों और छोटे रेंगनेवाले जीवों पर राज करेगा।”

<sup>27</sup>इसलिए परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में\* बनाया। परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में सृजा। परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। <sup>28</sup>परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी। परमेश्वर ने उनसे कहा, “तुम्हारे बहुत सी संताने हों। पृथ्वी को भर दो और उस पर राज्य करो। समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों पर राज्य करो। हर एक पृथ्वी के जीवजन्तु पर राज्य करो।”

<sup>29</sup>परमेश्वर ने कहा, “देखो, मैंने तुम लोगों को सभी बीज वाले पेड़ पौधे और सारे फलदार पेड़ दिए हैं। ये अन्न तथा फल तुम्हारा भोजन होगा। <sup>30</sup>मैं प्रत्येक हरे पेड़ पौधे जानवरों के लिए दे रहा हूँ। ये हरे पेड़-पौधे उन का भोजन होगा। पृथ्वी का हर एक जानवर, आकाश का हर एक पक्षी और पृथ्वी पर रेंगने वाले सभी जीवजन्तु इस भोजन को खाएंगे।” ये सभी बातें हुई।

<sup>31</sup>परमेश्वर ने अपने द्वारा बनाई हर चीज़ को देखा और परमेश्वर ने देखा कि हर चीज़ बहुत अच्छी है। शाम हुई और तब सवेरा हुआ। यह छठवाँ दिन था।

### सातवाँ दिन-विश्राम

**2** इस तरह पृथ्वी, आकाश और उसकी प्रत्येक वस्तु की रचना पूरी हुई। <sup>2</sup>परमेश्वर ने अपने किए जा रहे काम को पूरा कर लिया। अतः सातवें दिन परमेश्वर ने अपने काम से विश्राम किया। <sup>3</sup>परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीषित किया और उसे पवित्र दिन बना दिया। परमेश्वर ने उस दिन को पवित्र दिन इसलिए बनाया कि संसार को बनाते समय जो काम वह कर रहा था उन सभी कार्यों से उसने उस दिन विश्राम किया।

**मनुष्य** इस हिब्रू शब्द का अर्थ “मानव जाति” या एक नाम “आदम” है। यह हिब्रू शब्द “पृथ्वी” या “लाल मिट्टी” जैसा है।

**परमेश्वर ... स्वरूप में तुलना करें उत्पत्ति 5:1-3**

### मानव जाति का आरम्भ

<sup>4</sup>यह पृथ्वी और आकाश का इतिहास है। यह कथा उन चीजों की है, जो परमेश्वर द्वारा पृथ्वी और आकाश बनाने समय, घटित हुई। <sup>5</sup>तब पृथ्वी पर कोई पेड़ पौधा नहीं था और खेतों में कुछ भी नहीं उग रहा था, क्योंकि यहोवा ने तब तक पृथ्वी पर वर्षा नहीं भेजी थी तथा पेड़ पौधों की देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति भी नहीं था। <sup>6</sup>परन्तु कोहरा\* पृथ्वी से उठता था और जल सारी पृथ्वी को सींचता था।

<sup>7</sup>तब यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी से धूल उठाई और मनुष्य को बनाया। यहोवा ने मनुष्य की नाक में जीवन की साँस फूँकी और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया। <sup>8</sup>तब यहोवा परमेश्वर ने पूर्व में अदन नामक जगह में एक बाग लगाया। यहोवा परमेश्वर ने अपने बनाए मनुष्य को इसी बाग में रखा। <sup>9</sup>यहोवा परमेश्वर ने हर एक सुन्दर पेड़ और भोजन के लिए सभी अच्छे पेड़ों को उस बाग में उगाया। बाग के बीच में परमेश्वर ने जीवन के पेड़ को रखा और उस पेड़ को भी रखा जो अच्छे और बुरे की जानकारी देता है।

<sup>10</sup>अदन से होकर एक नदी बहती थी और वह बाग को पानी देती थी। वह नदी आगे जाकर चार छोटी नदियाँ बन गयीं। <sup>11</sup>पहली नदी का नाम पीशोन है। यह नदी हवीला\* प्रदेश के चारों ओर बहती है। <sup>12</sup>(उस प्रदेश में सोना है और वह सोना अच्छा है। मोती\* और गोमेदक रत्न\* उस प्रदेश में हैं।) <sup>13</sup>दूसरी नदी का नाम गीहोन है जो सारे कूश\* प्रदेश के चारों ओर बहती है। <sup>14</sup>तीसरी नदी का नाम दजला है। यह नदी अशशूर के पूर्व में बहती है। चौथी नदी फरात\* है।

<sup>15</sup>यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को अदन के बाग में रखा। मनुष्य का काम पेड़-पौधे लगाना और बाग की देखभाल करना था। <sup>16</sup>यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य

को आज्ञा दी, “तुम बगीचे के किसी भी पेड़ से फल खा सकते हो। <sup>17</sup>लेकिन तुम अच्छे और बुरे की जानकारी देने वाले पेड़ का फल नहीं खा सकते। यदि तुमने उस पेड़ का फल खा लिया तो तुम मर जाओगे।”

### पहली स्त्री

<sup>18</sup>तब यहोवा परमेश्वर ने कहा, “मैं समझता हूँ कि मनुष्य का अकेला रहना ठीक नहीं है। मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा जो उसके लिए उपयुक्त होगा।”

<sup>19</sup>यहोवा ने पृथ्वी के हर एक जानवर और आकाश की हर एक पक्षी को भूमि की मिट्टी से बनाया। यहोवा इन सभी जीवों को मनुष्य के सामने लाया और मनुष्य ने हर एक का नाम रखा। <sup>20</sup>मनुष्य ने पालतू जानवरों, आकाश के सभी पक्षियों और जंगल के सभी जानवरों का नाम रखा। मनुष्य ने अनेक जानवर और पक्षी देखे लेकिन मनुष्य कोई ऐसा सहायक नहीं पा सका जो उसके योग्य हो। <sup>21</sup>अतः यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य को गहरी नींद में सुला दिया और जब वह सो रहा था, यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर से एक पसली निकाल ली। तब यहोवा ने मनुष्य की उस त्वचा को बन्द कर दिया जहाँ से उसने पसली निकाली थी। <sup>22</sup>यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य की पसली से स्त्री की रचना की। तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री को मनुष्य के पास लाया

<sup>23</sup>और मनुष्य ने कहा,

“अन्ततः हमारे समान एक व्यक्ति।

इसकी हड्डियाँ मेरी हड्डियों से आई

इसका शरीर मेरे शरीर से आया।

क्योंकि यह मनुष्य से निकाली गई,

इसलिए मैं इसे स्त्री कहूँगा।”

<sup>24</sup>इसलिए पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन हो जाएँगे।

<sup>25</sup>मनुष्य और उसकी पत्नी बाग में नंगे थे, परन्तु वे लजाते नहीं थे।

### पाप का आरम्भ

**3** यहोवा द्वारा बनाए गए सभी जानवरों में सबसे अधिक चतुर साँप\* था। (वह स्त्री को धोखा देना चाहता

**साँप** शायद शैतान। उसे बहुधा साँप, अजदहा और “सागर का दैत्य” कहा गया है।

कोहरा ‘बादल,’ ‘धुन्ध’

हवीला अरब प्राय द्वीप के पश्चिमी किनारे के प्रदेश या संभवतः कूश के दक्षिण में अफ्रीका का भाग।

मोती कीमती मोटी सुगन्धवाला गोंद।

गोमेदक रत्न कीमती नग जिसमें नीली या भूरी परतें होती हैं।

कूश अफ्रीका में लाल सागर के पास एक देश।

फरात दो सबसे बड़ी नदी जो बाबेल और अशशूर के देशों से होकर बहती है।

था।) साँप ने कहा, “हे स्त्री क्या परमेश्वर ने सचमुच तुम से कहा है कि तुम बाग के किसी पेड़ से फल ना खाना?”

<sup>2</sup>स्त्री ने साँप से कहा, “नहीं परमेश्वर ने यह नहीं कहा। हम बाग के पेड़ों से फल खा सकते हैं। <sup>3</sup>लेकिन एक पेड़ है जिसके फल हम लोग नहीं खा सकते। परमेश्वर ने हम लोगों से कहा, ‘बाग के बीच के पेड़ के फल तुम नहीं खा सकते, तुम उसे छूना भी नहीं, नहीं तो मर जाओगे।’”

<sup>4</sup>लेकिन साँप ने स्त्री से कहा, “तुम मरोगी नहीं। <sup>5</sup>परमेश्वर जानता है कि यदि तुम लोग उस पेड़ से फल खाओगे तो अच्छे और बुरे के बारे में जान जाओगे और तब तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे।”

<sup>6</sup>स्त्री ने देखा कि पेड़ सुन्दर है। उसने देखा कि फल खाने के लिए अच्छा है और पेड़ उसे बुद्धिमान बनाएगा। तब स्त्री ने पेड़ से फल लिया और उसे खाया। उसका पति भी उसके साथ था इसलिए उसने कुछ फल उसे दिया और उसने उसे खाया।

<sup>7</sup>तब पुरुष और स्त्री दोनों बदल गए। उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने वस्तुओं को भिन्न दृष्टि से देखा। उन्होंने देखा कि उनके कपड़े नहीं हैं, वे नंगे हैं। इसलिए उन्होंने कुछ अंजीर के पत्ते लेकर उन्हें जोड़ा और कपड़ों के स्थान पर अपने लिए पहना।

<sup>8</sup>तब पुरुष और स्त्री ने दिन के ठण्डे समय में यहोवा परमेश्वर के आने की आवाज बाग में सुनी। वे बाग में पेड़ों के बीच में छिप गए। <sup>9</sup>यहोवा परमेश्वर ने पुकार कर पुरुष से पूछा, “तुम कहाँ हो?”

<sup>10</sup>पुरुष ने कहा, “मैंने बाग में तेरे आने की आवाज सुनी और मैं डर गया। मैं नंगा था, इसलिए छिप गया।”

<sup>11</sup>यहोवा परमेश्वर ने पुरुष से पूछा, “तुम्हें किसने बताया कि तुम नंगे हो? तुम किस कारण से शरमाए? क्या तुमने उस विशेष पेड़ का फल खाया जिसे मैंने तुम्हें न खाने की आज्ञा दी थी?”

<sup>12</sup>पुरुष ने कहा, “तूने जो स्त्री मेरे लिए बनाई उसने उस पेड़ से मुझे फल दिए, और मैंने उसे खाया।”

<sup>13</sup>तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, “यह तुमने क्या किया?” स्त्री ने कहा, “साँप ने मुझे धोखा दिया। उसने मुझे बेवकूफ बनाया और मैंने फल खा लिया।”

<sup>14</sup>तब यहोवा परमेश्वर ने साँप से कहा, “तुमने यह बहुत बुरी बात की।

इसलिए तुम्हारा बुरा ही होगा।

अन्य जानवरों की अपेक्षा तुम्हारा

बहुत बुरा होगा।

तुम अपने पेट के बल रेंगने को मजबूर होगे।

और धूल चाटने को विवश होगे

जीवन के सभी दिनों में।

<sup>15</sup> मैं तुम्हें और स्त्री को

एक दूसरे का दुश्मन बनाऊँगा।

तुम्हारे बच्चे और इसके बच्चे

आपस में दुश्मन होंगे।

तुम इसके बच्चे के पैर में डसोगे

और वह तुम्हारा सिर कुचल देगा।”

<sup>16</sup> तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा,

“मैं तेरे गर्भावस्था में तुझे बहुत दुःखी करूँगा

और जब तू बच्चा जनेगी

तब तुझे बहुत पीड़ा होगी।

तेरी चाहत तेरे पति के लिये होगी

किन्तु वह तुझ पर प्रभुता करेगा।”\*

<sup>17</sup>तब यहोवा परमेश्वर ने मनुष्य से कहा,

“मैंने आज्ञा दी थी कि तुम विशेष

पेड़ का फल न खाना।

किन्तु तुमने अपनी पत्नी की बातें सुनीं

और तुमने उस पेड़ का फल खाया।

इसलिए मैं तुम्हारे कारण इस

भूमि को शाप देता हूँ\*

अपने जीवन के पूरे काल तक

उस भोजन के लिए जो धरती देती है

तुम्हें कठिन मेहनत करनी पड़ेगी।

<sup>18</sup> तुम उन पेड़ पौधों को खाओगे

जो खेतों में उगते हैं।

किन्तु भूमि तुम्हारे लिए कँट और

खर-पतवार पैदा करेगी।

---

तेरी चाहत ... प्रभुता करेगा शाब्दिक तुम अपने पति पर हुकम चलाना चाहोगी। लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा। शाप देता हूँ शाब्दिक किसी वस्तु या व्यक्ति के लिये बुरा आत्मा लेकिन वह तुझ पर प्रभुता करेगा।